DOIs:10.2018/SS/202503013 --:-- Research Paper / Article / Review

हिंदी नाटकों में वैदिक पात्रों की प्रासंगिकता

डॉ.कुसुम लता
सहायक प्रवक्ता, हिंदी विभाग, दौलत राम कॉलेज
Email - dr.kusum77@gmail.com

शोधसार : वैदिक कालीन ज्ञान परम्परा हमारी अमूल्य निधि है।नाटक दृश्य-श्रव्य विधा है।नाटककार पात्रों के जरिये अपनी बात को पाठक या दर्शक-समूह तक पहुंचाता है। हिंदी साहित्य में वैदिक पात्रों को लेकर बहुत कुछ लिखा जा चुका है।साहित्य की विभिन्न विधाओं में वैदिक पात्रों के माध्यम से समय और समाज की परिवर्तित होती स्थितियों और परिस्थितियों को समय-समय पर उजागर किया जाता रहा हैं।अपने समय की नब्ज़ पहचानकर नाटककार ऐसे वैदिक पात्रों को लेकर नवीन प्रयोग करते रहे है।वैदिक पात्र जीवन के कई क्षेत्रों में व्याप्त विविधताओं को उजागर करने में सक्षम होते है।इतना ही नहीं ये वैदिक पात्र अनेक परिस्थितियों और क्षेत्रों में नये सन्दर्भों में प्रयुक्त होने की क्षमता रखते हैं। वैदिक पात्रों को आधार बनाकर वर्तमान जीवन की वैषम्यपूर्ण समस्याओं को उठाने वाले ये नाटक वर्तमान युग के वाहक हैं और भविष्य में भी रहेंगे।वैदिक ज्ञान परम्परा प्रत्येक युग में प्रासंगिक है।वैदिक कालीन पात्र जीवन के विविध क्षेत्रों में मार्ग प्रशस्त करते हैं।

बीज शब्द : नाटक, वैदिक पात्र, समाज, प्रासंगिकता, मिथक।

1. मूल आलेख :

शिक्षा,साहित्य,कला,ज्ञान-विज्ञान आदि के क्षेत्र वर्तमान दौर में काफी प्रभावित हुए हैं।विश्व के सभी देश एक-दूसरे पर आश्रित हुए हैं।सामाजिक विषमता की इस प्रक्रिया में समाज आर्थिक, राजनैतिक, स्त्री-पुरुष भेद,आदि कई स्तरों पर विषमता दिखाई देती है।सामाजिक विषमता के दौर में नाटक के द्वारा पाठक या दर्शक के समक्ष कई विचार और प्रश्न आत्ममंथन के लिए छोड़े जा सकते हैं। किसी भी समाज का उसकी संस्कृति से अटूट सम्बन्ध होता है।आज के भौतिकवादी युग में वैदिक ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता निरंतर बनी हुई है।परिवार,समाज,राष्ट्र,राज्य आदि के संवर्धन के साथ-साथ वैदिक युग में पर्यावरण संरक्षण का भाव दिखाई देता है जो आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।समाज सेवा,विश्व कल्याण की भावना,राजा का धर्म एवं कर्म,अतिथि सत्कार,ताप,त्याग,तपस्या आदि अनेक ऐसे भाव हैं जो इस युग के साहित्य में मिलते हैं।इसमें ज्ञान के विविध रूप हैं।वेद सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ हैं।वेद चार हैं-ऋग्वेद,यजुर्वेद,सामवेद,अथर्ववेद। ऋग्वेद पद्य में, यजुर्वेद गद्य में, सामवेद गीतों में और अथर्ववेद में तीनों का ही मिश्रण है।नाटक में चूँकि ये सभी समाविष्ट हैं इसलिए नाटक को पंचम वेद की संज्ञा दी गई।कोई भी नाटककार जब वैदिक पात्रों को लेकर नाट्य रचना करता है तो वह उन पात्रों का युगीन सन्दर्भों में प्रतीकात्मक प्रयोग करता है।इस प्रकार विभिन्न वैदिक पात्रों को लेकर विभिन्न परिस्थियों के अनुरूप ढालकर हिंदी नाटक लिखे गए।ये सभी नाटक आधुनिक

सन्दर्भों में प्रासंगिक हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में समाज जिन विषमताओं से जूझ रहा है उन सभी की ओर इन नाटकों के माध्यम से संकेत किया गया है।

हमारी स्मृति में मनु के विषय में जो ज्ञात तथ्य है वह यह कि मनु प्रलय के बाद मछली की कृपा से बच गए थे।उन्होंने श्रद्धा से विवाह किया और दोनों से एक पुत्री हुई-इला।मनु की इच्छा और जिद के कारण नैसर्गिक तरीके से इला को पुत्र बना दिया गया।इसकी प्रासंगिकता के विषय में स्वयं नाटककार लिखते हैं–" ....यह कहानी अनादिकाल से हो रहे स्त्री के अपहरण, उसके साथ बलात्कार और उसके लिए जातियों के लिए परस्पर युद्धों की कहानी है." 1 इस मिथकीय नाटक के सभी पात्र (मनु, वशिष्ठ,सुद्युम्न, श्रद्धा,इला) समसामयिक सन्दर्भों में प्रयुक्त हुए हैं। मनु और वशिष्ठ दोनों ही पात्र चारित्रिक कमजोरी से युक्त हैं।मनु एक उत्तराधिकारी को पाने की चाह में एक स्त्री को उसके ही अधिकारों से वंचित करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाते हैं।वशिष्ठ जब मनु को कहते हैं कि आपकी पत्नी ने आपकी ख़ुशी के लिए ही बेटी मांगी थी।माता ही संतान को जन्म देने के लिए सारी पीड़ा सहती है।केवल पिता होने के कारन पुरुष माँ के सारे अधिकार क्यों छीन लेना चाहता है? इस पर क्रोध में आकर मनु कहता है - "मनु - क्या मैं केवल पुरुष हूँ? केवल पिता हूँ? पति हूँ? मैं एक साम्राज्य का स्वामी भी हूँ. अपनी पत्नी से मुझे चाहिए था राज्य का उत्तराधिकारी . इसमें उसके अधिकार का प्रश्न ही कहाँ हैं? फिर स्त्री.......? "2 यह नाटक अस्मिता मूलक विमर्श से सम्बन्धित नाटक है। इसमें इला से सुद्युम्न बनने या बनाने की कथा है।स्त्री रूप में इला के अस्तित्व से खिलवाड़ वास्तव में प्रकृति की नैसर्गिक शक्ति से खिलवाड़ है।इला का स्त्री होना पिता रूप में राजा मनु को बहुत खलता है। उन्हें अपने उत्तराधिकारी के रूप में केवल और केवल पुत्र चाहिए।पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाने के बावजूद पुत्री होने पर मनु बहुत खिन्न होते हैं।

भूमंडलीकरण के दौर में सबसे अधिक जो आहत हुए हैं वे हैं मानवीय सम्बन्ध। इस नाटक में मनु राजनीतिक षड्यंत्रों से पूर्ण रूप से अवगत है। वह राजनीतिक दाव-पेंच के चलते अपने रक्त-संबंधों से भी खिलवाड़ करता है।राजनीतिक सोच को रखते हुए वे धर्म के नाम पर अधर्म की ओर बढ़ रहे थे।स्वयं मनु धर्म से अपनी राजनीतिक प्रतिष्ठा जुड़े होने की बात कहता हैं।वह राजनीति का पहला मूल्य अवसर साधने को मानते हैं। मनु वैज्ञानिक तकनीक द्वारा अनैतिक ढंग से अपनी पुत्री इला को पुत्र सुद्युम्न बनवाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि इला सुद्युम्न का जीवन जीते-जीते अकेलेपन,निराशा, टूटन, घुटन आदि को सहती है. वास्तव में भूमंडलीकरण के इस दौर में आज के मानव की यही प्रमुख समस्या है। मनु की राजनीतिक सोच आज के राजनीतिक प्रपंचों का जीता-जागता नमूना है। गुरु वशिष्ठ गुरु होकर भी हर धर्म, अधर्म में राजा का साथ देते हैं और अपना जीविकोपार्जन करते हैं।मनु के कहने पर वही इला को सुद्युम्न बनाते हैं.ना चाहते हुए भी सबकुछ अनैतिक करने की विवशता को वे अपनी पत्नी अरुंधती के समक्ष रखते हैं - " वशिष्ठ- .....सत्ता तो राजा की ही होती है न.राजपुरोहित भी उसी के अधीन है। धर्म तो एक मुहर है, जिसे राजा अपने संविधान पर लगाकर स्वयं को सुरक्षित कर लेता है, और हम सब कुछ जानते हुए भी चुप रहने को विवश हैं।"3 आलोच्य नाटक में नाटककार ने वैदिक पात्रों द्वारा युगीन समस्याओं को प्रस्तुत किया है।वैश्वीकरण के युग में स्त्री पर हो रहे अत्याचारों,अपहरण,बलात्कार जैसे जघन्य दुष्कर्मों को लेकर नाटककार ने मिथक कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह नाटक आधुनिक संदर्भों में पितृसत्तात्मक समाज की धारणाओं को खंडित करता है।

पृथु हमारी सभ्यता के ऐसे राजा हैं जिन्होंने पृथ्वी को अपनी पुत्री मानकर उसकी रक्षा करने का वचन लिया।इन्होने ही कृषि के रूप में उसका उपयोग करना सिखाया।पृथु ने धर्म के विरुद्ध आचरण करने वालों के लिए दंड का विधान बनाया.नाटककार जगदीश चन्द्र माथुर ने ' पहला राजा ' नाटक को युगीन सन्दर्भों में प्रयुक्त किया।स्वयं नाटककार के

शब्दों में - " वैदिक और पौराणिक साहित्य , पुरातत्व एवं इतिहास , लोकगीत और बोलचाल - इन सभी में मुझे प्रतीकों के उपकरण मिले हैं। उन समस्याओं को प्रकट करने के लिए जिनसे मैं इस नाटक में जूझ रहा हूँ।वे समस्याएँ सर्वथा आधुनिक हैं,वे उलझने मेरा ' भोग हुआ यथार्थ ' हैं।"4 इस नाटक में पृथु-कवष , अर्चना-उर्वी विरोधी युग्म बनकर आये हैं।पृथु पराक्रमी , निर्भीक ,श्रेष्ठ योद्धा है।वह देवताओं द्वारा मुनियों के लिए दिए गए अमृत और आर्य जाती की मर्यादा की रक्षा करता है।वह अकाल कि स्थिति में भी निर्भीक होकर कर्म से प्रेरित होकर धरती को ' पृथ्वी ' कहता है और उस पर हल चलाकर खेती की।पुरुषार्थ के चलते वह अपने आपको अपूर्ण समझने लगता है।काम की प्रबल लालसा भी उसे आकर्षित करती है।इतना ही नहीं काम की प्रबल लालसा भी उसे आकर्षित करती है। पृथु आधुनिक ,मानव की विडंबना,विसंगति ओंर पीड़ा को दर्शाता है। पृथु स्वप्नलोक में विचरण करने वाला युवक है।पृथु के वीरत्व भाव को जानकार गुरु अंग उन्हें दस्युओं के निष्कासन का काम सौंपते हैं।वह प्रजावत्सल एवं कर्तव्यपरायण राजा के रूप में कार्य करता है। उन्हें चाटुकारिता बिलकुल पसंद नहीं है।सूत और मागध जब उनके तेज,पराक्रम और प्रतापी चरित्र का गुणगान करते हैं तो पृथु निष्पक्ष भाव से कहते हैं-'' बन्द कीजिये यह शब्दाडम्बर अभी तो मैंने राजा होकर रत्ती-भर काम नहीं किया। अभी से स्तुति कैसी ? (सब लोगों को सम्बोधित करते हुए) सुनिये मुनिगण, सुनिये माता सुनीथा, सुनिये ब्रह्मावर्त के निवासियो ! आपने मुझे राजा बनाना स्वीकार किया। इसके लिए मुझे स्तुति नहीं, आपका सहयोग चाहिए। वाणी का विलास नहीं, कर्म का उल्लास चाहिए। विना मेहनत के तारीफ़ मुझे उतनी ही अशोभनीय लगती है जितनी बिना बुराई के निन्दा !''5 इसके ठीक विपरीत कवष कर्मशील युवा होने के भाव के साथ जीता है। कवष पुरुषार्थ से युक्त व्यक्तित्व है। वह राज्य के लिए कुछ बेहतर करने की इच्छा रखता है जिसे समाज के कुछ स्वार्थी या अधिकार सम्पन्न लोगों द्वारा पीछे धकेल दिया जाता है। उसकी इच्छा कभी न पूरा होने वाले स्वप्न के रूप में रह जाती है।अर्चना और उर्वी काम और कर्म का प्रतीक है।पृथु पूर्ण रूप से दोनों में से किसी को नहीं भोग पाता है।मुनि स्वार्थी नेताओं और उनके कार्य वर्तमान कुचक्रपूर्ण राजनीति का प्रतीक हैवे। जानबूझकर बाँध के काम में ढील देते हैं।सार्वजनिक हितों को दाव पर लगाकर मुनि अपने व्यक्तिगत हित साधने में लगे रहते हैं।जब गर्ग शुक्राचार्य से नहर के सुखी रह जाने की बात कहते हैं तो शुक्राचार्य दलगत राजनीति से प्रेरित होकर कहते हैं-" रहे सूखी! आचार्य गर्ग!- साफ़ बात है,आप दो में से एक बात चुन लीजिये। अपने परिवार,कुटुंब,कन्या अर्चना और आश्रम का भविष्य या सरस्वती की धारा में पानी , जिसका फ़ायदा होगा बस छोटे-मोटे किसानों, निषादों और बचे-खुचे दस्युओं को।" 6

वेन की कथा को लेकर बदरीनाथ भट्ट ने 'वेणु संहार' नाटक लिखा।इसमें वेन के अत्याचारों से पीड़ित प्रजा एवं मुनियों को दिखाया है। वे न के कुशासन द्वारा नाटककार ने शासक के आतंक एवं अत्याचारपूर्ण कुनीति को प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त किया है।वेन के राज्य में जो भी समाजहित में कार्य करता है वह दंड का अधिकारी होता है।यही आज के समाज की सच्चाई है। नाटककार ने आशा का सन्देश दिया है जो वेन की मृत्यु के साथ उभरती है।उसकी मृत्यु के साथ ही प्रजा को कष्टों से मुक्ति मिल जाती है। नाटक के अंत में वेन के अत्याचारों से दुखी होकर जनता उसे बंदी बना लेती है।प्रजा के इस साहसिक कार्य द्वारा नाटककार ने यह बताने का प्रयास किया है कि अगर जनता एकजुट हो जाए तो अन्यायी शासक के राज्य का अंत किया जा सकता है।

वैदिक पात्रों में ययाति,शर्मिष्ठा,पुरुरवा,उर्वशी का भी मिथकीय प्रयोग किया गया है। गोविन्द वल्लभ पन्त ने 'ययाति', दूधनाथ सिंह ने 'यमगाथा',नंदकिशोर आचार्य ने 'देहांतर' नाटक की रचना की।नन्द किशोर आचार्य ने पौराणिक कथा को आधार बनाकर मनुष्य की कामजन्य अतृप्त भावनाओं की ओर संकेत किया है। 'देहांतर' नाटक वास्तव में देह के भोग की कथा है।देह का अंतर मन में वितृष्णा के भाव उत्पन्न करता है, यही देहांतर है।ययाति के जीवन का महत्त्व

उसके चरित्र निर्माण में नहीं अपितु उसके जीवन की प्राथमिकता भोग में है।भोग भी अचार-विचार और व्यवहार का नहीं बल्कि देह का है।उनके जीवन में मानसिक सुख की अपेक्षा शारीरिक सुख का महत्व है। हजारों वर्षों बाद भी आज आधुनिक मनुष्य ययाति की भांति मानसिक सुख के परे दैहिक सुख को महत्व देता है और यही इस कथा की प्रासंगिकता है।कथा के अनुसार ययाति अपने बुढ़ापे में काम से प्रेरित होकर अपने ही पुत्र पुरुरवा का यौवन उधार लेता है।ययाति की पत्नी अपने पति के रूप में अपने पुत्र के यौवन को भोग नहीं पाती है। शर्मिष्ठा द्वारा संभोग के लिए इनकार किये जाने पर ययाति को आभास होता है कि अपनी काम वासनाओं पर रोक लगाना कितना अनिवार्य है।मनुष्य कि अतृप्त कामनाएं जीवन में अस्थिरता पैदा करती हैं।यही भूमंडलीकरण के दौर की एक प्रमुख समस्या है. मनुष्य की कामनाएं सब कुछ होकर भी अतृप्त रहती हैं।नाटककार ने ययाति के माध्यम से दिखाया है कि इन्हें मिटाकर ही सुखी जीवन जीया जा सकता है। नंदकिशोर आचार्य कृत ' देहांतर 'भी ययाति कि चिर-परिचित कथा पर आधारित है।ययाति से विवाह के बाद भी दमयंती कच से प्रेम करती है।ययाति शर्मिष्ठा से प्रेम करने लगता है। दमयंती के पिता शुक्राचार्य क्रोधित होकर ययाति को वृद्ध होने का शाप देते हैं।उसे इस शाप से मुक्ति केवल तभी मिल सकती है जब कोई दूसरा अपना यौवन उसे दे दे।पुरु अपने पिता को अपना यौवन उधार देता है।शर्मिष्ठा यह स्वीकार नहीं कर पाती है और अपने पुत्र कि सेवा-सुश्रुषा में व्यस्त हो जाती है। ययाति निराश होकर इंद्र की पुत्री बिन्दुमती से विवाह कर लेता है। जब ययाति को पता लगता है कि बिन्दुमती उस पर नहीं उसके पुत्र पर आसक्त है तो वह स्तब्ध रह जाता है। वर्तमान युग में संबंधों के मध्य ख़त्म होती मर्यादा मानवीय मूल्यों के ह्रास का कारण बनी है।इसमें पात्रों का अन्तर्विरोध और अंतर्द्वन्द्व उजागर हुआ है जिसके कारण पात्रों के जीवन में तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई है।

स्त्री-पुरुष के मध्य आत्मिक प्रेम ही उन्हें प्रेम की पराकाष्ठा तक पहुंचाता है।केवल दैहिक जरूरतों को पूरा करके सुखी वैवाहिक जीवन नहीं जीया जा सकता है।ययाति ने हर सम्बन्ध को वासना पूर्ति का साधन माना है।वह जीवनपर्यंत सुख की तलाश में घूमता रहता है।हर तरफ से जब उसे अकेला छोड़ दिया जाता है तब उसे समझ आता है कि हर किसी को अपनी नियति से स्वयं ही साक्षात्कार करना होता है।वह उससे आतंकित जितना भागता रहता है उतना वह काल छाया-सी उसे ग्रसती जाती है।नाटककार ने स्त्री-पुरुष संबंधों का मनोवैज्ञानिक चित्र खींचा है।शर्मिष्ठा अपने पुत्र के यौवन का भोग नहीं कर पाती है और ययाति यौवन प्राप्त करके भी शर्मिष्ठा को प्राप्त नहीं कर पाता है।वह दुखी मन से कहती है - " किसके लिए दीपक जलाऊं?किसे आमंत्रण दूँ?अपने ही पुत्र के यौवन को कि वह आये और ....अपनी माँ को भोगे ?"7 ययाति अहम् में यह भूल जाता है कि यौवन भले ही पुरु का हो परन्तु देह,इन्द्रियां और बाकी सब उसका है।आज भूमंडलीकरण के इस युग में यही वर्तमान जीवन की मूल समस्या है कि दाम्पत्य जीवन में प्रेम का स्थान दैहिक और वासनात्मक संबंधों ने ले लिया है।इससे दोनों का जीवन बोझिल हो जाता है और पति-पत्नी के संबंधों में बिखराव और अजनबीपन आ जाता है।

दूधनाथ सिंह ने ' यमगाथा ' में पुरुरवा को नए रूप में प्रस्तुत किया है.पुरुरवा को यज्ञ -विध्वंसक, ऋषि-मुनियों का शत्रु आदि कहा है।नाटक में पुरुरवा जनहित के लिए प्रयास करता है।इंद्र और पुरुरवा शोषक-शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।इंद्र पुरुरवा के विषय में जनता के समक्ष भ्रामक प्रचार करवाता है ताकि जनता उसकी विरोधी हो जाय।नारद क्रूर एवं अयोग्य शासक के खिलाफ उठाये गए स्वर को दबाने का प्रयास करता है.पुरुरवा का अंत होने पर भी वह अपने विचारों के रूप में जीवित रहता है।शंकर,इंद्र,कुबेर,वरुण,विष्णु,ब्रह्मा आदि वैदिक पात्रों को लेकर दुष्यंत कुमार ने 'एक कंठ विषपायी ' नाटक कि रचना की।नाटक की प्रासंगिकता के विषय में स्वयं नाटककार ने लिखा है - " ....जर्जर रूढ़ियों और परम्परा के शव से चिपटे हुए लोगों के सन्दर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि

और नए मूल्यों को संकेतित करने के लिए इस कथा में पर्याप्त सामर्थ्य है."8 इस नाटक में शंकर के तीन रूप सामने आते हैं - एक परंपराभंजक का, दूसरा जिसमें वह मानवीय संवेदनाओं से युक्त है, तीसरा रूप परम्राग्रस्त व्यक्ति का है।नायक में परम्पराद्रोह एवं परम्पराग्रस्त द्वंद्व चलता रहता है जिससे वह विसंगतिपूर्ण जीवन की पीड़ा को झेलता है।यही भूमंडलीकरण के दौर में मानव जीवन की विडंबना है कि जिन परम्पराओं से विद्रोह करके वह (मानव) नए जीवन मूल्यों कि स्थापना करता है,कालांतर में वह उन्ही में इस कदर चिपट जाता है कि उनके आगे वह युगीन सत्य को अनदेखा करने लगता है।शिव की प्रिया सती ऐसी परम्परा का प्रतीक है जिसके शव को शिव परम्पराग्रस्त होने के नाते या मोहासक्ति के कारण अपनी पीठ पर लादे घूम रहे हैं।परम्पराग्रस्त मूल्यों के प्रति उनका आक्रोश इन शब्दों में स्पष्ट दिखाई देता है -

" देवत्व और आदर्शों का परिधान ओढ़,

मैंने क्या पाया ?

निर्वासन !

प्रेयसी-वियोग !

हर परम्परा में मरने का विषय

मुझे मिला ,

हर सूत्रपात का श्रेय

ले गए और लोग

मैं ऊब चुका हूँ .

इस महिमा मंडित छल से "9

ठीक यही समस्या आज के आधुनिक मानव की है कि वह इसी उलझन में फंसा रहता है कि परम्परा और आधुनिकता के बीच में से वह किसका त्याग करे और किसका ग्रहण।शिव अंत में परम्परागत मूल्यों का विरोध करके आधुनिक-बोध को स्वीकार करते हैं।

राजा सत्य हरिश्चंद्र को लेकर भारतेंदु जी ने भी "एक सत्य हरिश्चंद्र' नाटक की रचना की।राजा हरिश्चन्द्र सूर्यवंशी थे।वे सत्य निष्ठ थे इसी कारण उनके नाम के साथ सत्य शब्द जुड़ गया।इसमें इंद्र ओरे विश्वामित्र भारत विरोधी ताकतों के रूप में उभरकर आये हैं.हरिश्चंद्र अपनी सच्चाई के बल पर भारत विरोधी शक्तियों का सामना करते हैं।इनकी सत्यवादिता ब्रिटिश राज के लिए एक चुनौती बनती है।यह नाटक चार अंकों में विभक्त है।राजा हरिश्चन्द्र,रानी शैव्या,इंद्र,विश्वामित्र इसके प्रमुख पात्र हैं।राजा हरिश्चन्द्र स्वप्न में दिए गए दान को भी यथार्थ जीवन में स्वीकार कर लेते हैं।स्वप्न में विश्वामित्र को ददन में दिए गए राज्य को वे सच में उन्हें दान में दे देते हैं इतना ही नहीं विश्वामित्र के द्वारा एक हजार स्वर्ण मुद्रा मांगने पर वे स्वयं और पत्नी तथा पुत्र को नगर के चौराहे पर बेच देते हैं। डॉ.लक्ष्मी नारायण लाल ने भी हरिश्चंद्र के पौराणिक मिथक को लेकर ' एक सत्य हरिश्चंद्र' नाटक लिखा.इसमें नाटककार ने हरिश्चंद्र,इंद्र आदि पात्रों के माध्यम से वर्तमान राजनीति कि ओर दृष्टि डाली है.इसमें सत्ताधारियों द्वारा निम्न वर्ग के

शोषण की कथा है।इस प्रकार विभिन्न वैदिक पात्रों को लेकर समय-समय पर मिथकीय नाटक लिखे गए.ये सभी नाटक आधुनिक सन्दर्भों के अनुकूल हैं।भूमंडलीकरण के इस दौर में समाज जिन विषमताओं से जूझ रहा है उन सभी की ओर इन नाटकों के माध्यम से संकेत किया गया है।वर्तमान जीवन की वैषम्यपूर्ण समस्याओं को उठाने वाले ये नाटक युग के वाहक हैं और भविष्य में भी रहेंगे।

2. निष्कर्ष :

चारों वेद,आरण्यक,ब्राह्मण ग्रन्थ,उपनिषद,वेदांग आदि में ज्ञान परम्परा के अनुपम स्रोत हैं।वैदिक ज्ञान परम्परा में परिवार,न्याय,धर्म,दर्शन,समाज व्यवस्था,राजनीति व्यवस्था,ज्ञान-विज्ञान,विभिन्न कलाओं आदि का विशेष महत्व है।राजतंत्र के विभिन्न सिद्धांत,मानव-व्यवहार एवं कौशल,कृषि व्यवस्था आदि वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का अटूट अंग रहे हैं।इस युग में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत सम्मानजनक थी।इस युग के अनेक पात्र,घटनाएं आज भी प्रासंगिक हैं।ये पात्र हमारे लिए मील के पत्थर हैं जो विभिन्न परिस्थितियों में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

संदर्भिका :

1. प्रभाकर श्रोत्रिय :इला:प्रवीण प्रकाशन,1996:पृ.11
2. प्रभाकर श्रोत्रिय :इला:प्रवीण प्रकाशन,1996:पृ.34
3. प्रभाकर श्रोत्रिय :इला:प्रवीण प्रकाशन,1996:पृ.97
4. जगदीशचंद्र माथुर:पहला राजा:राजकमल प्रकाशन,1999:पृ.7
5. जगदीशचंद्र माथुर:पहला राजा:राजकमल प्रकाशन,1999:पृ.46
6. जगदीशचंद्र माथुर:पहला राजा:राजकमल प्रकाशन,1999:पृ. 93-94
7. नन्द किशोर आचार्य :देहांतर:वाग्देवी प्रकाशन, पृ.31
8. दुष्यंत कुमार:एक कंठ विषपायी:लोक भारती प्रकाशन, 2016;पृ.7
9. दुष्यंत कुमार:एक कंठ विषपायी:लोक भारती प्रकाशन, 2016 पृ.83-84